श्री कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिब जी, अनादि अछरातीत।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत।।

रास

श्री श्री श्री ग्रन्थ रास किताब अंजील वाणी पुरानी
प्रमोध पुरी हवसा मध्य उतरी सो शुरू हुई।। चाल ।।

पारब्रह्म अक्षरातीत श्री राजजी महाराज तथा उनके आनन्द अंग श्री श्यामाजी महारानी व बारह हजार ब्रह्मसृष्टियों ने प्रेम की जो आनन्द लीला केवलब्रह्म के अन्दर की, उसका वर्णन इस रास ग्रन्थ में किया गया है। पुरानी इंजील वाणी को बाइबिल (New Testament) कहते हैं। इसमें प्रेम को पारब्रह्म का स्वरूप माना गया है, अर्थात् गॉड इज लव एण्ड लव इज गॉड (God is Love and Love is God)। इसमें छिपे भेदों को खोलने के लिए उस इंजील का नाम "रास" रखा है जिसमें आत्मा और परमात्मा का मिलन स्पष्ट बताया है। यह वाणी प्रमोध पुरी हवसा (नौतनपुरी–जामनगर में) उतरी, उसका वर्णन शुरू होता है।

धाम के धनी श्री प्राणनाथजी महाराज सम्वत् १७२२ में सुन्दरसाथ को जगाने के लिए जागनी यात्रा में दीपबन्दर में जयराम भाई कन्सारा के यहां पहुंचे तो देखा कि श्री देवचन्द्रजी द्वारा जगाई हुई आत्मा (जयराम कन्सारा) ज्यों का त्यों माया में भूला पड़ा है। यह पहले पांच रास के प्रकरण उसे माया में से निकाल कर धाम धनी और निज घर की याद कराने के लिए उतरे। यह उपदेश सब साथ के लिए मार्ग-दर्शन के वास्ते हैं। इन पांचों प्रकरणों के बाद में जयराम भाई की आत्मा को दुबारा जगाकर बतलाया है। इससे आगे की वाणी हबसा में उतरी, सो उनको सुनाई। हे साथजी! पहली बार ब्रज में तथा दूसरी बार रास खेलने के बाद जब परमधाम में हम जागृत हुए और धाम धनी से पूरी माया देखने की चाह की, तो तीसरी बार जागनी (कालमाया) के ब्रह्माण्ड में हम सब आकर निज घर की लीला, धनी धाम को भूल गए। तो सोई हुई आत्माओं को (१) भवसागर मोहजल की पहचान पहले प्रकरण में कराई, (२) दूसरे प्रकरण में माया से जागना कैसे है, बतलाया, (३) तीसरे प्रकरण में माया के हट जाने पर जीव को जगाने का रास्ता बताया (४) चौथे प्रकरण में अपने धनी श्री राजजी महाराज से माया में रहकर प्रेम करना बतलाया, तथा (५) पांचवें प्रकरण में कालमाया को छोड़कर धनी की मधुर ध्वनि सुनते हैं—कैसे हमें संसार को छोड़ना है, बतलाया है और आगे हबसा में श्री श्यामाजी के रास वाले शृंगार की अवतरित वाणी को सुनाकर आत्मा जागृत की।

हवे पेहेलां मोहजलनी कहूं वात, ते ता दुखरूपी दिन रात।
दावानल बले कई भांत, तेणी केटली कहूं विख्यात।। १ ।।

अब सबसे पहले भवसागर (मोहजल) की बात कहती हूं। वह (मोहजल) तो पल-पल, दिन-रात, दुःख ही दुःख का घर है। इसके अन्दर चारों ओर जंगल में दावानल (अग्नि)—जो दो लकड़ी की रगड़ से ही अपने आप लगती है और बुझती है, लगी हुई है। ईर्ष्या, द्वेष, काम, क्रोध, मोह, लोभ, मद, मत्सर,

Nijanand App

इत्यादि की आग में सब जल रहे हैं। इसकी हकीकत का कहां तक बयान करूं? यह आग हम अपने अन्दर लगा लेते हैं और जलते रहते हैं।

विस्वने लागी जाणे ब्राध, माहें अगिन बले अगाध।
ते ता पीडे दुष्ट ने साध, नहीं अधखिणनी समाध।। २ ।।

यह मोहमाया संसार को न मिटने वाले रोग की तरह लगी है। इसके अन्दर न बुझने वाली काम, क्रोध, लोभ, मोह की अथाह, अपार अग्नि जल रही है। यह साधु, सन्त, पापी तथा दुष्ट सभी को सता रही है। इस कारण से आधे पल के लिए भी किसी को मानसिक शान्ति नहीं मिलती है।

कृपा करोछो अमज तणी, सिखामण देओ छो अतिघणी।
अहनिस लेओ छो अमारी सार, तो मोहजल उतरसूं पार।। ३ ।।

हे धाम के धनी ! आप हम सुन्दरसाथ पर कृपा करते हो और कई प्रकार से समझाते हो तथा दिन-रात पल-पल हमारी खबर लेते रहते हो, इसलिए हम भवसागर से पार उतर जाएंगे।

ए माया छे अति बलवंती, उपनी छे मूल धणी थकी।
मुनिजनने मनाव्या हार, सिव ब्रह्मादिक न लहे पार।। ४ ।।

यह माया बहुत शक्तिशाली है क्योंकि यह धाम धनी (अक्षरातीत) की आज्ञा से उत्पन्न हुई है (हमेशा माया अक्षर ब्रह्म के हुक्म से संसार बनाती है)। इस माया में ऋषि-मुनि भी हार गए। यहां तक कि शंकर (महादेव) भगवान तथा ब्रह्मा, आदि भी इसको नहीं जीत सके।

सुक सनकादिक ने नव टली, लखमी नारायण ने फरीवली।
विष्णु वैकुंठ लीधां माहें, सागर सिखर न मूक्या क्यांहें।। ५ ।।

शुकदेव मुनि तथा सनकादिक ऋषियों (सनक, सनन्दन, सनातन, सनत कुमार) को भी इसने नहीं छोड़ा। लक्ष्मी और नारायण जो जगत के परमात्मा हैं, को भी इस माया ने अपने फन्दे में फंसा रखा है। बैकुण्ठ में बैठे विष्णु भगवान को भी अपने अन्दर ले लिया है, अर्थात् समुद्र से पहाड़ की चोटी तक (पाताल से बैकुण्ठ व नारायण भगवान—सम्पूर्ण क्षर पुरुष) किसी को नहीं छोड़ा।

ए ऊपर हवे सूं कहूं, बीजा नाम ते केहेना लऊं।
एणे वचने सरवालो थयो, ब्रह्मांडनो धन सर्वे आवयो।। ६ ।।

इसके ऊपर अब क्या बाकी रहा जिसका नाम लूं। इन वचनों से सब कुछ आ गया और सारे क्षर पुरुष के ब्रह्माण्ड की शक्तियां आ गईं।

तत्व सहु एणीए जीती लीधां, चौद लोक पोतानां कीधां।
वली लीधो तत्व मोह, जे थकी उपन्या सहु कोए।। ७ ।।

इस माया ने सभी पांच तत्वों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) को जीत रखा है और चौदह लोकों की सृष्टि को भी अपने वश में कर रखा है, अर्थात् पाताल, रसातल, महातल, तलातल, सुतल, वितल, अतल, भूलोक, भुवर्लोक, स्वर्गलोक, महर्लोक, जनलोक, तपलोक व सतलोक अर्थात् बैकुण्ठ और फिर इसके ऊपर मोह तत्व (निराकार) जिससे सारे संसार की उत्पत्ति हुई है, को अपने फन्द में घेर रखा है।

साखी— **कहे इंद्रावती वल्लभा, ए माया छे अति छल।**
हवे जुध मांड्यूं छे अमसूं, एहेनो कह्यो न जाय बल।। ८ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे धनी! यह माया बहुत ही छल, कपट वाली है। इसने हमसे लड़ाई छेड़ रखी है। इसकी ताकत का वर्णन किया नहीं जा सकता।

Nijanand App

एहना आउध अमृत रूप रस, छल बल वल अकल।
अगिन कुटिल ने कोमल, चंचल चतुर चपल।। ९ ।।

इसके छलने वाले मीठे वचन, सुन्दर रूप, रसीली वस्तुएं, कपटपूर्ण शक्ति, दाव-पेंच, बुद्धि की चतुराई, क्रोधाग्नि, दुष्टता, नर्म स्वभाव, चंचलता, चतुराई और चालाकी हथियार हैं।

हवे एहनो केटलो कहूं विस्तार, जोरावर अति अपार।
चाल– **मोसूं जुध मांड्यूं आसाधार, जुध करे छे वारंवार।। १० ।।**

अब आप बताओ, इसका और कितना वर्णन करें? यह अति शक्तिशाली है। इसने मेरे से लगातार यूं लड़ाई ठान रखी है तथा बार-बार मुझ पर हमला करती है।

एहेने लाग्यो कोई एवो खार, मारो केड न मूके नार।
में बांध्यां सामां हथियार, तो जाण्यो जोपे एहेनो मार।। ११ ।।

इसको मेरे से ऐसी चिढ़ (ईर्ष्या) हो गई है कि यह माया मेरा पीछा नहीं छोड़ती है। इसलिए मैंने भी इससे लड़ने के लिए हथियार संभाले हैं, तो इस माया के (वार) चोट को अच्छी तरह समझ पाई हूं।

एणे समे जे अममां बीती, केटली कहूं तेह फजीती।
में तो रुडी रीते ग्रहीती, पण मूने लीधी जीती।। १२ ।।

इस युद्ध के समय जो मेरे ऊपर बीती, उस दुर्गति (फजीहत) का मैं कहां तक वर्णन करूं? मैंने तो सेवा का एक अच्छा रास्ता समझकर माया में कदम बढ़ाया था, परन्तु फिर भी इसने मुझे जीत लिया। (सही रास्ते पर नहीं चलने दिया)

बाहें ग्रही लई निसरी, में त्रण जुध कीधां फरी फरी।
पछे गत मत मारी हरी, लई वस पोताने करी।। १३ ।।

इस माया ने मेरा बाजू पकड़कर खींच लिया मैंने भी बार-बार तीन युद्ध किए। पहला—अरब में खेता भाई के काम को जाना और लौटने पर धनी देवचन्द्रजी का प्रणाम स्वीकार न करना, दूसरा—श्री फूलबाईजी का सुन्दरसाथ के लिए त्याग करना, तीसरा—सुन्दरसाथ को इकट्ठा करके उनकी सेवा करने का उपाय करना और जिसके फलस्वरूप हबसा में जाना पड़ा। अन्त में प्रेम दरवाजा अहमदाबाद से भेष बदलकर बाहर निकलना पड़ा और इस माया ने मुझे भुला दिया और अपने अधीन किया।

तमे अनेक सिखामण कही, पण भरम आडे में कांई नव ग्रही।
मोसूं एवी तोहज थई, जो वाणी तमारी में नव लही।। १४ ।।

हे धाम धनी ! आपने तो अनेक तरह से समझाया, पर माया के जाल के कारण मैं आपके ज्ञान को ग्रहण नहीं कर सकी। मुझसे फिर भी इतनी भूल हुई कि मैं आपके वचनों को समझ न सकी।

तमे पेरे पेरे समझावी, मूने तोहे बुध न आवी।
जुगते करीने जगावी, लई तारतमे लगावी।। १५ ।।

आपने अनेक प्रकार से समझाया, किन्तु मुझे फिर भी समझ नहीं आई। आपने कई प्रकार के उपाय करके मुझे जगाया (अर्थात् शास्त्रों-पुराणों की गवाहियां दे देकर समझाया) पर मैं न समझ पाई। अन्त में आपने जागृत बुद्धि तारतम ज्ञान में लगा लिया।

Nijanand App

तमे अंतरगते दीधां द्रष्टांत, त्यारे भागी मारा मननी भ्रांत।
हवे तमे आव्या एकांत, संसार दसा थई स्वांत।। १६ ।।

आपने दृष्टान्तों के बातूनी अर्थ समझाए, तब मेरे मन की शंकाएं दूर हुईं। अब आप मेरे हृदय में विराजमान हो गए हैं, इस कारण से मायावी झंझटों से मैं छूट गई।

ज्यारे धणी धणवट करे, त्यारे बल वेरी ना हरे।
वली गया काम सराडे चढ़े, मन चितव्या कारज सरे।। १७ ।।

हे धनी ! जब आप पतिपना निभाते हैं, तब यह माया जो हमारी दुश्मन है, इसकी सब शक्तियां नष्ट हो जाती हैं और हमारे सब बिगड़े काम सीधे हो जाते, अर्थात् संभल जाते हैं तथा हमारे मन के चाहे समस्त काम पूरे हो जाते हैं।

साखी–
मायाना मुख माहें थी, जुगते काढी जोर।
दई तजारक अतिघणी, माया कीधी पाधरी दोर।। १८ ।।

हे धनी ! आपने अच्छे ढंग से माया के फन्द से मुझे निकाला और माया के सिर पर ऐसी चोट मारी कि माया मुझे छोड़कर भाग गई।

धणीना जेम धणवट, लीधी भली पेरे सार।
आ दुख रूपणीना मुख मांहें थी, बीजो कोण काढे बिना आधार।। १९ ।।

हे धनी ! जैसा एक पति को पतिपना निभाना चाहिए, ठीक उसी प्रकार आपने मेरी संभाल की। हे धनी! इस दुःखरूपी माया में से आपके बिना दूसरा कौन निकाल सकता था?

चाल–
तमे कृपा कीधी अति घणी, जाणी मूल सगाई घरतणी।
माया पाडी पडताले हणी, बल दीधूं मूने मारे धणी।। २० ।।

आपने मूल परमधाम की अंगना का सम्बन्ध जानकर अत्यन्त कृपा की जो मेरे अन्दर बैठकर इतनी शक्ति दे दी कि इतनी बलवती माया को मैंने पैर से ठोकर मारकर कुचलकर नाश कर दिया।

वली गत मत आवी सुधसार, छल छूटो ने थयो करार।
दयानो नव लाधे पार, त्यारे अलगो थयो संसार।। २१ ।।

अब फिर से माया छूट गई और मैं निश्चिन्त हो गई जिससे मेरी भूली हुई सुध-बुध आ गई। आपकी इस महान् कृपा से ही मैं संसार के झंझटों से मुक्त हो गई।

हवे आव्यूं धन अविनासी, दुख दावानल गयूं नासी।
रुदे ग्रहूं लीला विलासी, हवे ते हूं करूं प्रकासी।। २२ ।।

अब अखण्ड धन (पच्चीस पक्षों की अखण्ड वाणी) सदा सत्य रहने वाला आ गया और जंगल की अग्नि (दावानल) के समान माया का दुःख दूर हो गया। अब हृदय में परमधाम की प्रेममयी लीला को लेकर संसार में ज़ाहिर करती हूं।

हवे ए धन में जोपे जाण्यूं, जिभ्याए न जाय वखाण्यूं।
मारा हैडामां आण्यूं, अम विना कोणे न माण्यूं।। २३ ।।

अब इस वाणी रूपी धन को मैंने अच्छी तरह समझ लिया। इसका इस जिह्वा से वर्णन सम्भव नहीं है। इसको मैंने अपने हृदय में धारण कर लिया है, इसको मेरे बिना कोई नहीं जान सका।

Nijanand App

साखी– बल नथी आंहीं अमतणूं, नहीं अमारे वस।
ए निध आवी तम थकी, ते में चित कीधूं चोकस।। २४ ।।

मुझे यह विश्वास हो गया है कि मेरे पास अपनी कोई शक्ति नहीं थी और न कोई हमारे वश की ही बात थी। यह सब न्यामत का खजाना आपने ही दिया है।

में चित मांहें चितव्यूं, जाण्यूं करसूं सेवा सार।
मल्यो धणी मूने धामनो, सुफल करूं अवतार।। २५ ।।

(हबसा जाने से पहले) यह जानकर कि मुझे धाम के धनी मिल गए हैं, मैंने अपना जीवन सफल करने के लिए सुन्दरसाथ की सेवा करने का विचार मन में लिया।

जे मनोरथ मनमां रह्यो, मारा धणी श्रीराज।
खरुं करतां खोटा मांहेंथी, पण नव सिध्यूं एके काज।। २६ ।।

मेरे मन में झूठे संसार में से पैसा कमाकर सेवा करने का जो शुभ विचार आया था, हे धनी ! उन सब विचारों में से एक भी कार्य न हो सका।

में मारूं बल जाण्यूं, हूं तो छूं अति मूढ।
ए थाय सर्वे धणी थकी, ते में कीधूं दृढ।। २७ ।।

मुझे अब यह विश्वास हो गया है कि यहां जो भी होना है, धनी की आज्ञा से ही होना है। मैंने जो यह सोचा था कि अपने बल से सेवा करूं, वह केवल मेरा भ्रम था।

ढाल– मूने दुख साले ए मन मांहें, नव जाय कह्यो ते क्यांहें।
गमे तमने तेहज थाय, बीजे सामूं कोणे न जोवाय।। २८ ।।

वह बात मेरे मन में खटकती रहती है और कहनी में नहीं आती। हे धनी ! यहां वही होता है जो आप चाहते हैं। आप जैसा समर्थ दूसरा कोई दिखाई नहीं देता, क्योंकि कोई है ही नहीं।

ए दुख लाग्यूं मूने सही, ए उत्कंठा मारा मनमां रही।
एणी दाझे ते मूने दही, निध हाथथी निसरी गई।। २९ ।।

सुन्दरसाथ की सेवा करने का जो अवसर हाथ से निकल गया इसका मुझे बहुत दुःख है। मेरे मन की चाहना (सुन्दरसाथ की सेवा) मेरे मन में रह गई, जिसकी जलन से मैं दुःखी हूं।

जाण्यूं लाभ मायानो लेसूं, निद्राने वांसो देसूं।
धणीने चरणे रेहेसूं, माया केहेसे ते सर्वे सेहेसूं।। ३० ।।

मैंने सोचा था कि सुन्दरसाथ की सेवा का लाभ माया में लूंगी और धनी के चरणों में रहूंगी, माया से विमुख होने में जो भी संकट आएंगे उन्हें सहन करूंगी।

एणे समे वली फेरवी लीधी मायाए सिखामण दीधी।
धणी थकी विमुख कीधी, पाणीना जेम पीधी।। ३१ ।।

इस समय माया ने ऐसी चोट मारी कि मुझे धनी से विमुख कर फिर से अपने फन्दे में फंसाकर पानी की तरह पी गई।

Nijanand App

एहेवो छल करी छेतरी, मन मूल माहेंथी फेरी।
एणे तो आप सरीखी करी, चित्त चितवणी बहुविध धरी।। ३२ ।।

इस प्रकार का कपट कर माया ने ठगा और सुन्दरसाथ की सेवा से मन फिराकर अपने समान बना लिया तथा मेरे मन की इच्छा मन में ही रह गई।

मन मांहें सवलुं देखे, जाणे माया सुख अलेखे।
धणीना सुख न पेखे, विख अमृत लागे विसेखे।। ३३ ।।

मैंने सब विचार करके सोचा था कि माया में सुन्दरसाथ की सेवा से सम्मान प्राप्त करने का सुख ही सबसे बड़ा है और इस तरह से धनी के अखण्ड सुखों को छोड़कर झूठे सम्मान के सुख को अच्छा समझा था।

जुओ भूलवी छेतरे केम, आगे छेतरी मूने जेम।
सुकजी तो पुकारे एम, जे छल पुरी ए भरम।। ३४ ।।

देखो! यह माया किस तरह से भुलाकर ठगती है, जैसा कि इसने मुझे पहले भी ठगा है। इस बात की गवाही शुकदेव मुनि भी देते हुए कहते हैं कि माया छल और भ्रम से भरी हुई है।

आंहीं सोहेली थई तम थकी, एहेने ओलखतूं कोय नथी।
सुकदेवें तो कांईक कथी, बीजा रह्या मथी मथी।। ३५ ।।

हे धनी ! यह माया जिसको आज दिन तक कोई पहचान नहीं पाया है, यह आपकी कृपा से अब सरल हो गई, क्योंकि हमने इसे पहचान लिया। शुकदेव जी ने तो इसकी कुछ पहचान कराई भी है पर दूसरे तो इसका मन्थन ही करते रहे, कुछ भी बोल नहीं पाये।

एहेने निरमूल करी नाखी तमे, हजी जोपे जाणी नथी अमे।
एहेना रमाड्यां सहु रमे, मांहें बंधाणां सहु को भमे।। ३६ ।।

इस माया को आपने जड़ से ही नष्ट कर डाला है, फिर भी हमने इसको अच्छी तरह से नहीं जाना कि माया अब हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकती। इस संसार के जीव माया के चक्कर में ही घूमते हैं और इसके बन्धन में ही बंधे हुए फिरते हैं।

ए वचन तो आंहीं केहेवाय, जे अमे न बंधाऊं मायाय।
एहना बंध पड्या सहु कायाय, अमे छूट्या धणीनी दयाय।। ३७ ।।

यह वचन मैं इसलिए कह रही हूं कि अब मैं धनी की कृपा से माया के बन्धन से छूट गई हूं, अन्यथा सारे जगत के मानव शरीरों को इसने अपने जाल में बांध रखा है।

एम चौद लोकमां कोई नव कहे, जे पार मायानों आ लहे।
मोटी मत धणीमां रहे, बीजा भार पुस्तक केरा वहे।। ३८ ।।

इस चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में ऐसा कोई नहीं कहता है कि उसने माया को जीत लिया है, क्योंकि जागृत बुद्धि का ज्ञान तो केवल धाम धनी श्री राजजी महाराज के पास ही है। बाकी दूसरे लोग संसार में पुस्तकों का बोझा ही ढो रहे हैं, क्योंकि बाकी सब ग्रन्थ स्वप्न की बुद्धि के हैं।

Nijanand App

साखी– सास्त्र पुराण वेदांत जो, भागवत पूरे साख।
नहीं कथा ए दंतनी, सत वाणी ए वाक।। ३९ ।।

६ शास्त्र १८ पुराण जिसमें भागवत भी शामिल है, इस बात की गवाही दे रहे हैं कि अक्षरातीत पारब्रह्म की सतवाणी तारतम ज्ञान से ही माया के बन्धन से छूट सकते हैं, जिसको पढ़कर मैं छूटी हूं। यह सत्य है। यह दन्तकथा नहीं है, पर बाकी सब दन्तकथाएं हैं।

आ वेराट माहें दीसे नहीं, पार वचन सुध जेह।
लवो मुख बोलाय नहीं, तो केम पार पामे तेह।। ४० ।।

इस चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में अक्षर और अक्षरातीत की पहचान कराने वाला कोई नहीं है। एक शब्द भी बेहद का नहीं बताते हैं तो सम्पूर्ण ज्ञान का पार कैसे बता सकते हैं?

चाल– हवे मायानों जे पामसे पार, तारतम करसे तेह विचार।
बह्मांड मांहें तारतम सार, एणे टाल्यो सहुनो अंधकार।। ४१ ।।

अब जो तारतम वाणी को पहचानता है वही माया से पार जा सकेगा, अन्यथा नहीं। इस ब्रह्माण्ड में जागृत बुद्धि, तारतम ज्ञान ही सबसे श्रेष्ठ है, जिसने सारे जगत के अज्ञान के अन्धकार मिटाकर जागृत बुद्धि पराशक्ति का उजाला कर दिया, जो शास्त्रों में लिखा था—**तारतम्येन जानाति सच्चिदानन्द लक्षणं।**

लोक चौद मायानों फंद, सहु छलतणा ए बंध।
समझ्या बिना सहुए अंध, तारतम केहेसे सहु सनंध।। ४२ ।।

तारतम ज्ञान से ही सब भेद खुलते हैं कि चौदह लोकों का बह्माण्ड ही माया का फन्दा है, जिससे छल व कपट से सब बिना समझे अन्धों की तरह बंधे जा रहे हैं।

नहीं राखूं संदेह एक, पैया काढूं सहुना छेक।
आ वाणी थासे अति विसेक, कहूं पारना पार विवेक।। ४३ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि यह तारतम वाणी ही खासकर श्रेष्ठ है जिससे शुरू से अन्त तक के सारे संशय मिट जाते हैं और उस पारब्रह्म अक्षरातीत, जो क्षर से पार अक्षर, अक्षर के भी पार परमधाम में हैं, का सही ज्ञान मिलता है।

न केहेवाय माया मांहें आ वाणी, पण साथ माटे कहेवाणी।
साथ आवसे रुदे आंणी, ते में नेहेचे कहूं जाणी।। ४४ ।।

वास्तव में इन चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड इस वाणी के लेने का पात्र ही नहीं है, पर सुन्दरसाथ जो खेल देखने परमधाम से आये हैं, उनके लिए कहनी पड़ती है। यह मैं निश्चित रूप से जानती हूं कि सुन्दरसाथ के हृदय में जब यह वाणी उतरेगी तब ही (चरणों तले) आएंगे।

भारे वचन छे निरधार, साथ करसे एह विचार।
जो न कहूं सतनो सार, तो केम साथ पोहोंचसे पार।। ४५ ।।

यह वाणी जो साथ के लिए कह रही हूं, बहुत भारी वचन हैं, क्योंकि यह हद के पार बेहद और उसके पार अक्षर-अक्षरातीत के निज घर की वाणी है और उसका विचार भी ब्रह्मसृष्टि सुन्दरसाथ ही करेगा। यदि इस सत्य वाणी का सार (परमधाम पच्चीस पक्षों की पहचान) मैं न कहूं तो सुन्दरसाथ (ब्रह्मसृष्टि) अपने मूल घर कैसे वापस आएंगे?

Nijanand App

साखी– साथ मलीने सांभलो, जागी करो विचार।
जेणे अजवालूं आ कर्युं, परखो पुरुख ए पार।। ४६ ।।

हे सुन्दरसाथजी ! सब मिलकर सुनो और होश में आकर के विचार करो कि जिसने यह जागृत बुद्धि का ज्ञान देकर अन्धकार हटाया, उस पारपुरुष अक्षरातीत धाम के धनी की पहचान करो।

आपण हजी नथी ओलख्या, जुओ विचारी मन।
विविध पेरे समझाविया, अने कही निध तारतम।। ४७ ।।

मन में विचार करके देखो कि हमने अभी तक भी (प्राणनाथ धाम के धनी) को पहचाना नहीं। धाम धनी ने तरह-तरह से समझाया तथा अपने और परमधाम की पहचान के लिए तारतम की अमूल्य न्यामत (ज्ञान) दी।

नित प्रते सहु साथने, वालो जी दिए छे ए सार।
दया करीने वरणवे, आपण आगल आधार।। ४८ ।।

सदा ही सब सुन्दरसाथ को वालाजी (श्री प्राणनाथजी महाराज धनी श्री देवचन्द्रजी के तन से) ने अति कृपा करके हमें सार वस्तु (अखण्ड) ज्ञान देते थे।

वृजतणी लीला कही, वली विसेखे रास।
श्रीधाम तणा सुख वरणवे, दिए निध प्राणनाथ।। ४९ ।।

ब्रज की लीला का वर्णन किया और खासकर रास की लीला का वर्णन किया तथा (श्री प्राणनाथजी श्री देवचन्द्रजी के तन से) परमधाम के सुखों का वर्णन करते थे।

हवे एह धणी केम मूकिए, वली वली करो विचार।
मूल बुध चेतन करी, धणी ओलखो आ वार।। ५० ।।

हे सुन्दरसाथजी! बारम्बार विचार करो कि जिस धनी ने हमारी सोई हुई आत्मा को जागृत बुद्धि से जगाया है, उनकी इस बार पहचान करो। ऐसे धनी को हम कैसे छोड़ सकते हैं?

आ जोगवाई छे जाग्या तणी, अने विचार माहें समझण।
जे समझो ते जागजो, पण आ अवसर अरधो खिण।। ५१ ।।

यह मनुष्य तन जागृत होने के लिए तथा विचार कर समझने के लिए मिला है। इसलिए समझ कर जागो, क्योंकि यह अवसर आधे पल के लिए ही है।

आगे धणी पधार्या अममां, अमे करी न सक्या ओलखांण।
ए निखरपणे निध निगमी, थई ते अति घणी हांण।। ५२ ।।

आगे धनी हमारे बीच तन धारण करके आए थे (श्री देवचन्द्रजी के तन में) जिनकी हम पहचान नहीं कर सके। हमने लापरवाही से इनको खो दिया जिससे अपना बहुत नुकसान हुआ।

आव्या धणी न ओलख्या, अमे भूल्या एणी भांत।
विना विचारे न समझ्या, निगमी निध साख्यात।। ५३ ।।

धनी आए, पर हमने पहचाना नहीं। इस बात की बड़ी भूल की और साक्षात् धाम धनी को बिना विचार किए खो दिया (अर्थात् श्री देवचन्द्रजी के तन को छोड़कर चले गए।)

Nijanand App

जो ए विचारिए एक वचन, तो अलगां थैए पासेथी केम।
चाल– **दीजे प्रदखिणा रात ने दिन, कीजे फेरो सुफल धन धन।।५४ ।।**

यदि हम उनके एक वचन पर भी विचार करते तो उनसे अलग नहीं होते। हम दिन-रात उनकी परिक्रमा देकर अपना जीवन सफल बनाते।

दीवे टाल्यो ज्यारे सुंन सोहाग, त्यारे पतंग पाम्यो वेराग।
कां झंपावी ओलवे आग, कां कायानो करे त्याग।।५५ ।।

यहां एक दृष्टान्त है कि पतंगे का सुहाग (पति) अंधेरा है। दीपक जलने पर अंधेरा मिट जाता है तो पतंगे को पति का विरह सताता है, इसलिए झांप मारकर दीपक को बुझाता है या अपने आपको उस पर मिटा देता है।

जुओ जीवतणी ए रीत, नव मूके अंधेरनी प्रीत।
धणी अमारो अछरातीत, अमे तोहे न समझ्या पतीत।।५६ ।।

हे सुन्दरसाथजी ! संसार का एक जीव अपने पति का वियोग (अन्धकार का) नहीं सहन कर सकता। अपने पति तो साक्षात् अक्षरातीत धाम के धनी हैं, पर हम इतने नीच हो गए कि धनी का वियोग सहन कर लिया।

हवे घर मांहें ऊंचूं केम जोसूं, हंसी कही वात न करी वर सूं।
ए धणी विना केने अनुसरसूं, हवे अमे रोई रोईने मरसूं।।५७ ।।

अब परमधाम जाने पर उस धनी के सामने कैसे मुंह ऊंचा करके देखूंगी, क्योंकि मैंने अपने धनी से कभी हंसकर मीठी-मीठी बातें नहीं कीं। अब उस धनी के बिना किसकी बात मानें? अब तो तड़फ-तड़फ कर ही मरना है।

ए अमारी वीतकनी विध, मूने मरडी कीधी बेसुध।
अमने छेतर्‍या एणी बुध, तो गई अखंड अमारी निध।।५८ ।।

यह मेरी बीतक (गाथा) है, जिसने मुझे जिन्दा ही मुरदा कर दिया। हमारी बुद्धि इस प्रकार से ठगी गई कि बेसुधी में धनी को खो दिया।

जो पाणीवल अलगां जाय, तो खिनमात्र वरसां सो थाय।
धणी विना केम रहेवाय, जो कांईक निध ओलखाय।।५९ ।।

यदि हमें अपने धनी की पहचान हो जाती, तो एक पल की जुदायी बरसों के समान लगती और हम प्रीतम के बिना कैसे रहते?

मीन जल विना जेणी अदाय, अंतर व्रह न खमाय।
तो व्रह आपण केम सेहेवाय, जो एक लवो समझाय।।६० ।।

जिस प्रकार मछली की हालत बिना पानी के होती है, वह पानी से बिछुड़ना सहन नहीं कर पाती, उसी प्रकार यदि एक भी वचन से हमने धनी की पहचान कर ली होती तो उनका अलग होना हमसे सहन न होता।

अमे व्रह धणीनो खम्या, जे दिन वृथा निगम्या।
अमे भरम मांहें भम्या, जो अगनी व्रह न दम्या।।६१ ।।

हम माया में भटक गए जिस कारण इतने दिन तक व्यर्थ में धनी का वियोग सहन किया। हमें तो उस समय ही विरह की अग्नि में तन छोड़ देना था।

Nijanand App

साखी— एणे मोहे माहूं कर्‍या, करी न सक्या विचार।
सुनाई आवी सहुने, तो आडो आव्यो संसार।। ६२ ।।

इस भूल ने मुझे दुःखी कर रखा है, जिस भूल के कारण कुछ भी विचार न कर सकी। मैं तो क्या, सभी सुन्दरसाथ को माया ने भटका दिया, इसलिए हम संसार छोड़कर धनी के साथ न चल सके। माया आड़े आ गई।

जो विध लहुं वचननी, तो संसार अमने सूं।
एनुं कांई चाले नहीं, जो ओलखूं आपोपूं।। ६३ ।।

यदि मैं एक ही वचन का विचार कर अपनी पहचान कर लेती, (कि मैं धनी की अंगना हूं) तो माया हमारा क्या बिगाड़ लेती?

आगल एम कह्युं छे, जे आंधलो चाले सही।
ज्यारे भटके भीत निलाटमां, तिहां लगे देखे नहीं।। ६४ ।।

कहावत कही जाती है कि अन्धा मनुष्य भी चलता जाता है, पर सामने से जब तक दीवार की ठोकर नहीं लगती तब तक संभलता नहीं है।

ते तां अमने अनभव्युं, अमे तोहे न जाणी सनंध।
घन लाग्यो कपालमां, अमे तोहे अंधना अंध।। ६५ ।।

इसका हमने अनुभव किया, तो भी हम हकीकत न समझ पाए। हम अन्धों से भी अन्धे हो गए। माथे में चोट लगने पर भी हम संभल नहीं पाए।

आंखां तोहे न उघड़ी, वाले कही अनेक विध।
अंध अमे एवां थयां, निगमी बेठा निध।। ६६ ।।

पिया ने मुझे अनेक तरह से समझाया तो भी मेरी अन्दर की आंखें नहीं खुलीं। मैं ऐसी अन्धी हो गई कि अपने धनी को ही खो बैठी।

अंधने आंख रुदे तणी, पण अमने मांहें न बाहेर।
तो निध खोई हाथथी, जो कीधो नहीं विचार।। ६७ ।।

अन्धे की अन्दर की आंखें खुली होती हैं, किन्तु मैं बाहर व अन्दर से अन्धी हो गई। इस कारण बिना विचार किए हुए आए धनी को खो दिया।

चाल— अंधने आंख रुदे तणी होय, पण अमने नव दीसे कोय।
अमे तो रह्या निध खोय, टांणे भूल्या सूं थाय रोय।। ६८ ।।

अन्धे की अन्दर की आंख होती है जिससे वह संभला रहता है, परन्तु हमारी दोनों आंखें फूट गईं जिस कारण धनी को गंवा बैठी। समय हाथ से निकल गया। अब रोने से क्या फायदा?

गए अवसर सूं थाय पछे, धन गए हाथ सहु घसे।
मांहें हांण बाहेर सहु हसे, ते तो मांहेंनी मांहे रडसे।। ६९ ।।

जब समय (अवसर) हाथ से निकल जाता है तो पीछे पछताने से क्या फायदा? धन की हानि पर सब पछताते हैं। नुकसान अपना होता है। संसार वाले हंसते हैं। ऐसा व्यक्ति अन्दर ही अन्दर रोया करता है।

Nijanand App

साथ ए पेर अमसूं थई, निध हाथ आवी करी गई।
दिन घणां अम मांहें रही, पण अमे दुष्टें जाणी नहीं।।७० ।।

हे सुन्दरसाथजी ! मेरी भी यही हालत हुई। धनी आए और चले गए। हमारे साथ बहुत दिन रहे भी, पर हम इतने दुष्ट निकले कि उनकी पहचान न कर सके।

दुरमती करे तेम कीधूं, अमृत ढोलीने विख पीधूं।
धणी सेहेजे आव्या सुख न लीधूं, कारज कोई नव सिध्यूं।।७१ ।।

मूर्ख की तरह हमने भी किया। अमृत के समान धनी को गवां दिया और जहर के समान माया को ग्रहण किया। सरलता से (अक्षरातीत) धाम के धनी मिलने पर भी हम अपना कोई भी कार्य सिद्ध नहीं कर सके।

हवे ए दुख केणे कहिए, अंग मांहें आतम सहिए।
कीधूं पोतानुं लहिए, हवे दोष कोणे दैए।।७२ ।।

इस भूल का दुःख अब मैं किससे कहूं? अब तो अन्दर ही अन्दर सहन कर अपनी की हुई भूल का फल भुगतना पड़ेगा। इस भूल का दोष किसको दें?

तोहे धणिए हाथथी मूकी नहीं, तो वली आपणमां आव्या सही।
ए निध मुखथी न जाय कही, जे आंहीं अम ऊपर दया थई।।७३ ।।

इतनी भूल करने पर भी धनी ने अपनी अंगना जानकर मेरा हाथ नहीं छोड़ा और फिर से अपने में (मेरे तन में आकर बैठ गए) आ गए। अब इस कृपा का, जो मेरे ऊपर की है तथा इस सुख का वर्णन मेरे मुख से नहीं किया जाता।

धन गयूं ते आव्यूं वली, गयो अंधकार सहु टली।
सुखना सागर मांहें गली, एने बीजो न सके कोए कली।।७४ ।।

गए धनी फिर से आ गए। अज्ञान का सब अन्धकार (माया) हट गया और अब मैं सुख के सागर में आनन्द लेने लगी। इसको मुझसे कोई ले नहीं सकता, क्योंकि यह सुख मेरा है।

हवे में सुख अखंड लीधां, मनना मनोरथ सीधां।
वाले आप सरीखडा कीधां, फल वांछाथी अधिक दीधां।।७५ ।।

अब मैंने अखण्ड सुख को प्राप्त कर लिया। मन के मनोरथ पूर्ण हो गए। धाम धनी ने मुझे अपने समान बना लिया। मेरी चाहनाओं से भी अधिक सुख मुझे दिए।

साखी– कृपा कीधी अति घणी, वली आव्या तत्काल।
तेहज वाणी ने तेहज चरचा, प्रेम तणी रसाल।।७६ ।।

धनी अपार कृपा करके तुरन्त ही आ गए और उसी तरह रस-भरी वाणी से रसीली चर्चा का आनन्द देने लगे हैं।

वली वचन सोहामणां, वली वरणव नी विध विध।
आव्या ते आनन्द अति घणे, ल्याव्या ते नेहेचल निध।।७७ ।।

फिर से वही मन को भाने वाले मीठे वचन, फिर से तरह-तरह की चर्चा तथा अखण्ड वाणी लाकर अत्यन्त आनन्द देने लगे।

Nijanand App

ए निध निरमल अति घणी, दिए साथने सार।
कोमल चित करी लीजिए, जेम रुदे रहे निरधार।।७८ ।।

अब यह बेशक वाणी सुन्दरसाथ को सम्पूर्ण जानकारी देती है। इसलिए हे सुन्दरसाथजी ! चित्त को सरल बनाकर ग्रहण करें, जिससे उनकी वाणी हृदय में ठहरे।

पचवीस पख छे आपणा, तेमा कीजे रंग विलास।
प्रगट कह्या छे पाधरा, तमे ग्रहजो सहु साथ।।७९ ।।

हे साथजी! परम धाम के पच्चीस पक्ष अपने हैं। इसमें सदा चितवन करके आनन्द लें। धनी ने परमधाम का सीधा मार्ग बतला दिया है, जिसको हृदय में उतारें।

आपणू धन तां एह छे, जे दिए छे आधार।
रखे अधखिण तमें मूकतां, वालो कहे छे वारंवार।।८० ।।

वास्तव में अपनी सम्पत्ति परमधाम के पच्चीस पक्षों का सुख धनी हमें दे रहे हैं। धनी तो बार-बार कह रहे हैं कि आधे पल के लिए भी इस सुख को न छोड़ो।

पख पचवीस छे अति भला, पण ए छे आपणो धरम।
साख्यात तणी सेवा कीजिए, ए रुदे राखजो मरम।।८१ ।।

पच्चीस पक्षों का सुख अति सुखदायी तो है, परन्तु अब अपना कर्तव्य है कि साक्षात् धनी की सेवा में मग्न हो जाएं और इस भेद को अपने हृदय में रखें।

चित ऊपर वली चालिए, धणी तणे वचन।
ए वाणी तमे चित धरो, हूं कहूं छूं द्रढ करी मन।।८२ ।।

धनी के वचनों को हृदय में लेकर फिर से रहनी में आकर उसके अनुसार चलें। इस बात को हृदय में ले लो, मैं बार-बार समझाकर दृढ़ता से कहती हूं।

दई प्रदखिणा अति घणी, करूं दंडवत परणाम।
सहु साथना मनोरथ पूरजो, मारा धणी श्री धाम।।८३ ।।

परमधाम के पच्चीस पक्षों की बार-बार परिक्रमा करके धनी के चरणों में दण्डवत् प्रणाम कर विनती करती हूं कि हे धाम के धनी ! सब सुन्दरसाथ की मन की चाहनाओं को पूर्ण करो।

मनना मनोरथ पूरण कीधां, मारा अनेक वार।
वारणे जाय इंद्रावती, मारा आतमना आधार।।८४ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि हे मेरी आत्मा के आधार धाम के धनी ! आपने सदा हमारी मनोकामना को पूर्ण किया है। मैं आपके चरणों पर बलिहारी (न्यौछावर) जाती हूं।

।। प्रकरण ।। १ ।। चौपाई ।। ९० ।।

माया गई पोताने घेर, हवे आतम तूं जाग्यानो केर।
तो मायानो थयो नास, जो धणिए कीधो प्रकास।। १ ।।

धनी दुबारा कृपा कर आ गए। परमधाम के पच्चीस पक्षों का सुख देने लगे हैं। इसके सामने माया टिक नहीं सकती। माया अपने हृदय से हट गई है, इसलिए हे मेरी आत्मा ! अब तू जागने का प्रयत्न कर। धनी ने आकर जागृत बुद्धि का ज्ञान दिया तो माया नष्ट हो गई है।

Nijanand App